महिला सशक्तिकरण

डॉ० पल्लवी सिंह
अस्सिटेंट प्रोफेसर,
डी०डी०के०के० (पी०जी०) डिग्री कॉलेज,
चिंगरावठी (बुलन्दशहर)

सारांश

प्रस्तुत शोध में महिला सशक्तिकरण एवं भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता और महिलाओं में सशक्त मार्ग में होने वाली बाधाएँ एवं चुनौतियाँ पुरानी एवं रूढ़िवादी विचारधाराओं के कारण भारत में कई सारे क्षेत्र में महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार के लिए बाहर जाने की आजादी नहीं होती है। इन बाधाओं को देखते हुए सरकार ने समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाने के लिए योजनाएँ चलाई, जिसका सकारात्मक परिणाम मिला। पुरानी सोच को छोड़कर भारतीय महिलायें आज राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हैं। 21वीं सदी नारी जीवन की सुखद संभावनाओं की सदी है, जो एक सुखद संकेत है।

शब्द कुंजीः **महिला सशक्तिकरण, लैंगिक असमानता, बाधाएँ एवं चुनौतियाँ, रूढ़िवादी विचारधारा, घरेलू हिंसा, पुरुष प्रधान समाज, सामाजिक न्याय, राजनैतिक न्याय, महिलाओं की शिक्षा, भ्रूण हत्या बुरी प्रथायें, समाज में भेदभाव, सर्व शिक्षा अभियान, महिला आरक्षण।**

परिचयः—

महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले ये समझ लेना चाहिए कि हम सशक्तिकरण से क्या समझते हैं। साशक्तिकरण से तात्पर्य किसी यक्ति की उस योग्यता से है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण के इस लेख में हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हैं।

कबीरदास ने कहा है **''गये रोये हंसि खेलि के, हरत सवौं के प्राण कहै कबीर या घाव को, समझै संतु सुजान''** इसका अर्थ यह है कि गाकर, रोकर, हंसकर या खेलकर नारी सबके प्राण हर लेती है। कबीर कहते हैं इसका आघात या चोट केवल संत और ज्ञानी ही समझते हैं।

सभी को सृजन की शक्ति माना जाता है। स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित–परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सु–अवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकताः–

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता के बहुत से कारण सामने आते हैं। प्राचीनकाल की अपेक्षा मध्यकाल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आई है।

1. आधुनिक युग में भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्वपूर्ण राजनैतिक, प्रशासनिक पदों पर आसीन है। वही ग्रामीण महिलायें घर में रहने के लिए बाध्य हैं। सामान्य स्वस्थ सुविधाएँ और शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं।
2. भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता एक मुख्य कारण भुगतान में असमानता भी है। एक अध्ययन में सामने आया है कि समान, अनुभव एवं योग्यता के बावजूद भी भारत में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम भुगतान दिया जाता है।
3. शिक्षा के मामले में भी भारत की महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं।
4. जब हम लैंगिक असमानता को दूर कर पायेंगे और महिलाओं के लिए भी पुरुषों की तरह समान शिक्षा तरक्की और भुगतान सुनिश्चित कर सकेगे तभी देश विकास की तरफ अग्रसर होगा।
5. भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ–बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में महिला देवियों को पूजन की परम्परा है, लेकिन आज केवल यह एक ढोंग मात्र रह गया है।
6. पुरुष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक अधिकार काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया।
7. आधुनिक समय में कई समूह और एन.जी.ओ. महिलाओं के अधिकार को लेकर इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।
8. महिलाएँ ज्यादा खुले दिमाग की होती है और सभी आयामों में अपने अधिकारों को पाने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ रही है हालाँकि अपराध इसके साथ–साथ चल रहे हैं।
9. महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया। इनके साथ कई प्रकार की हिंसा परिवार, समाज में भेदभाव भी किया गया। ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है। प्राचीनकाल से भारत में लैंगिक असमानता थी आर पुरुष प्रधान समाज था।

भारत में महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएँ या चुनौतियाँः–

भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जिसके कई तरह के रिवाज, मान्यताएँ और परम्पराएँ शामिल हैं। इनमें से कुछ पुरानी मान्यताएँ ऐसी भी हैं, जो भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए बाधा सिद्ध होती है। उन्हीं बाधाओं में से कुछ निम्नलिखित हैं–

1. पुरानी और रूढ़िवादी विचारधाराओं के कारण भारत के कई सारे क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा या फिर रोजगार के लिए घर से बाहर जाने के लिए आजादी नहीं होती है।
2. अपने वर्तमान सामाजिक और आर्थिक दशा को बदलने में नाकाम साबित होती है। रूढ़िवादी विचारधाराओं के वातावरण में रहने के कारण महिलाएँ खुद को पुरुषों से कम समझने लगती हैं।
3. कार्यक्षेत्र में होने वाला शोषण भी महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है। निजी क्षेत्र जैसे की सेवा उद्योग शैक्षिक संस्थाएँ और अस्पताल इस समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।
4. समाज में पुरुष प्रधानता के वर्चस्व के कारण महिलाओं के लिए समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। पिछले कुछ समय में कार्यक्षेत्रों में महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़नों में काफी तेजो से वृद्धि हुई है। पिछले कुछ दशकों में लगभग 170 प्रतिशत वृद्धि देखने को मिली है।
5. कार्यस्थलों पर भारत में अभी भी महिलाओं के साथ लैंगिक स्तर पर काफी भेदभाव किया जाता है। कई सारे क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के लिए बाहर जाने की भी बाधाएँ सामने आती हैं।
6. भारत में अभी भी हर वर्ष लगभग 15 लाख लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले कर दी जाती है। शादी जल्द होने के कारण महिलाओं का विकास रूक जाता है। वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं हो पाती हैं।
7. भारतीय महिलाओं के विरूद्ध कई सारे घरेलू हिंसाबों के साथ दहेज, ऑनर किलिंग और तस्करी जैसे गंभीर अपराध देखने को मिलते हैं।
8. कामकाजी महिलाएँ भी देर रात में अपनी सुरक्षा को देखते हुए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग नहीं करती हैं। महिला सशक्त्किरण तभी संभव है जब महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके। पुरुषों की तरह वह भी स्वच्छंद रूप से कभी भी आ–जा सके।
9. कन्या भ्रूण हत्या या फिर लिंग के आधार पर गर्भपात भारत के महिला सशक्तिकरण के रास्ते में आने वाली सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। कन्या भ्रूण हत्या के कारण हरियाणा और जम्मू कश्मीर जैसे प्रदेशों में स्त्री–पुरुष लिंगानुपात में काफी ज्यादा अंतर है। महिला सशक्तिकरण के दावे तब तक सत्य नहीं होंगे जब तक कन्या भ्रूण हत्या पर रोक नहीं लगेगी।

भारत में महिला सशक्तिकरण में सरकार की भूमिकाः–

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाए चलाई जा रही हैं। इनमें से कई सारी योजनाएँ रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य जैसी चीजों से सम्बन्धित हैं। इन योजनाओं का गठन भारतीय महिलाओं की परिस्थिति को देखते हुए किया गया है। ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। इसमें कुछ योजनाएँ मनरेगा, सर्वशिक्षा अभियान, जननी सुरक्षा योजना आदि हैं।

महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित योजनाएँ इस आशा के साथ चलाई जा रही हैं कि एक दिन भारतीय समाज में महिलाओं को पुरुषों की ही तरह प्रत्येक अवसर का लाभ प्राप्त होगा।

सरकार की योजनाएँः–

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
2. महिला हेल्पलाइन योजना
3. उज्ज्वला योजना
4. सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम
5. महिला शक्ति केन्द्र
6. पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण
7. संसद द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए पास किए गए अधिनियम

महिलाओं की राज निर्माण में भूमिकाः–

आधुनिक युग की नारी पढ़–लिखकर स्वतंत्र है। वह अपने अधिकार के प्रति सचेत है। वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष कार्य करती हैं। महिलाएँ भारत की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं।

भारत में ऐसी महिलाओं की कमी नहीं है, जिन्होंने समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिए अपने अन्दर के डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। इसका परिणाम यह भी देखने को मिल रहा है। आज देश की महिलाएँ जागरूक हो चुकी हैं। महिला न उस सोच को बदल दिया है कि वह घर–परिवार की जिम्मेदारी अच्छे से निभा सकती है। महिलाएँ बड़े से बड़े कार्य क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। फिर चाहे काम मजदूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का हो महिलाएँ अपनी योग्यताएँ हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं।

निष्कर्षः—

भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार है। निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में महिला, सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा। समाज की पुरुष युक्त व्यवस्था है। यह बहुत आवश्यक है कि महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदले और संवैधानिक तथ कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव आए।

आज के समाज में कई भारतीय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हैं, फिर भी बहुत सारी महिलाओं को सहयोग और सहायता की आवश्यकता है। उन्हें शिक्षा और आजादीपूर्वक कार्य करने सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी में अभी भी सहयोग की आवश्यकता है क्योंकि भारत की सामाजिक–आर्थिक प्रगति उसके सामाजिक–आर्थिक प्रगति पर निर्भर करती है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को मजबूती प्रदान करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए। इक्कीसवीं सदीं नारी जीवन के सुखद सम्भावनाओं की सदी है। आज की नारी अब सक्रिय और जागृत हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कहीं है ''नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियाँ एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति रोक नहीं पायेगी। वर्तमान में नारी रूढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर रही है। यह एक सुखद संकेत है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. महिला सशक्तिकरण, प्रो० मानचंद खंडेलवाल, अरिहंत पब्लिशिंग हाउस, जयपुर (2002)
2. महिला सशक्तिकरण और समाज, डॉ० राकेश कुमार आर्य, डायमंड बुक्स पब्लिशिंग
3. महिला सशक्तिकरण और नारीवादी, पी०डी० शर्मा, रावत पब्लिकेशन, सत्यशाम अपार्टमेंट, सेक्टर–3, जवाहर नगर, जयपुर–302004
4. महिला सशक्तिकरण, ब्रह्म कुमार व जगदीश चन्द, प्रकाशन एवं मुद्रक साहित्य विभाग, ओम शान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन शान्तिभवन, आबू रोड–307510
5. महिला सशक्तिकरण : संपूर्ण पहलू, कृष्ण चन्द चौधरी, पब्लिकेशन डिविजन गर्वमेंट ऑफ इंडिया (2018)
6. महिला सशक्तिकरण : दशा और दिशा, मनीष कुमार, पब्लिकेशन पांडुलिपि प्रकाशन, 1 जनवरी 2020
7. महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा विषयक चुनौतियाँ, संपादक डॉ० नीशू कुमार, पब्लिकेशन प्रशांत पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली (2010)
8. महिला सशक्तिकरण की रूपरेखा (1801–1900), डॉ० सत्येन्द्र नाथ द्विवेदी, पब्लिकेशन राजतरंङ्गिणी शैक्षिक प्रकाशन, पटना